विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

शोधार्थी
कु. निर्मला अनंत
व्याख्याता, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
बेरला, बेमेतरा (छ.ग.)

शोध–निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) निशा श्रीवास्तव
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (शिक्षा)
घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय,
आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)

सह–निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) अनिता श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
कल्याण महाविद्यालय, सेक्टर–7, भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को जानना है। किसी भी कार्य को करने का ढंग सभी व्यक्तियों में पृथक–पृथक होता है कोई शीघ्रता से, तो कोई उस कार्य को धीरे –धीरे करता हैं समय प्रबंधन का दैनिक जीवन में अनुसरण करने वाले व्यक्ति समय का महत्त्व समझते हैं। वे अनुशासित और सुव्यवस्थित ढंग से तय कार्यों को उत्तम गुणवत्ता के साथ सम्पादित करने में दूसरों की अपेक्षा अधिक सक्षम होते हैं। उनकी यह क्षमता उन्हें नेतृत्व क्षमता में भी निपुण और सुयोग्य बनाती है और वे अन्य लोगों का नेतृत्व करते हुए उनमें भी इस अनुशासन का संचार करते हैं।

मूल रूप से सभी मनुष्य को समय प्रतिबंधित होना चाहिए। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम व्यवस्था, लिंग एवं संकाय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि

पर प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन के लिए दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप चयनित किया गया, जिनमें 200 कला संकाय, 200 विज्ञान संकाय एवं 200 वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को लिया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए सनसनवाल (2007) के द्वारा निर्मित समय प्रबंधन मापनी का उपयोग किया गया एवं शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु 10 वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम द्वारा प्राप्त अंकों से है।

शोध के परिणाम बताते हैं कि विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया । विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संकाय का सार्थक प्रभाव पाया गया। विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं संकाय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पाया गया।

भूमिका

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। शिक्षा ही वह रेखा है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न एवं पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान व शक्तिशाली प्राणी बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इसीलिए शिक्षा विद्यालय तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण जीवन को स्पर्श करती है। मानव व्यवहार सर्वदा किसी न किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख होता है। मनुष्य अपने जीवनकाल में जिन कार्यों को करने के लिए क्रियाशील होता है, उनके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन उसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसे समझने के लिए उसके सही उद्देश्य को समझना आवश्यक होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के योग्य बनता है। **अब्राहम लिंकन (1952)** के अनुसार, ''मैंने जो कुछ भी सीखा है, किताबों से सीखा है''। इसी प्रकार शिक्षा के महत्त्व को **नेल्सन मंडेला (1969)** ने अपने शब्दों में इस प्रकार समझाने का प्रयास किया है, ''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप दुनिया बदलने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं''।

व्यवहार इतनी जटिल प्रक्रिया है कि इसके प्रयोग को तब तक सार्थक रूप में आँका नहीं जा सकता, जब तक उसे प्रभावित करने वाले सभी अभिप्रेरकों को पहचान न लिया जाये। अभिप्रेरकों के निर्धारण में वातावरण में निहित भौतिक कारकों के साथ–साथ व्यक्ति में समाहित आतंरिक वैयक्तिक कारक भी महत्वपूर्ण होता है। स्पष्ट है कि शिक्षा के चिंतन में

व्यक्ति, पर्यावरण, परिणाम ये तीन इकाईयाँ ही अपना स्थान नहीं रखती, अपितु परिणाम के स्वरुप का विकास और व्यवस्था भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

समय तलवार की तरह होता है। यदि हम समय के अनुसार नहीं चलते हैं, तो वह हमें पीछे छोड़ कर आगे निकल जाता है। **बेंजामिन फ्रैंकलिन (1952)** के अनुसार, ''आप विलम्ब कर सकते हैं पर समय नहीं करेगा''। मूल रूप से सभी मनुष्यों को प्रतिबंधित करना कठिन होता है, किन्तु फिर भी उसे प्रतिबद्धित करके नियोजित किया जा सकता है। कुछ छात्र सदा कक्षा में देरी से आते हैं और अवज्ञा प्रदर्शित करते हैं। अर्थात् उनमें देर से आने के कई कारण जैसे वाहन का खराब होना, माता–पिता की देखभाल करना आदि बताते हैं। इसी प्रकार यदि कोई शिक्षक कक्षा में देरी से आते हैं, तो उनका व्याख्यान पूर्ण नहीं हो पाता और छात्रों का नुकसान होता है।

किसी भी कार्य को करने का ढंग सभी व्यक्तियों में पृथक–पृथक होता है। कोई किसी कार्य को शीग्रतिशीघ्र करने का प्रयास करता है, तो कोई उसे आने वाले कल पर टालते रहता है। यह कहा भी गया है कि ''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब''। अर्थात् यदि किसी कार्य को कल पर टाला जाता है तो उस कार्य की उपयोगिता काम हो जाती है। समय प्रबंधन इस बात को दर्शाता है कि हम समयानुसार अपने कार्यों को समाप्त करते हैं या प्रारम्भ करते हैं। आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण में यह अत्यंत आवश्यक है कि बच्चों को पाठशालाओं में ही समय और इसके सही प्रबंधन के महत्त्व को समझाया जाना चाहिए और जीवन को इसके अनुकूल बनाने पर बल दिया जाना चाहिए। बच्चे यदि छात्र जीवन में ही समय प्रबंधन में निपुण हो जायेंगे तो जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिए स्वयं को बेहतर ढंग से तैयार कर पायेंगे। विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम **व्यवस्था,** जीवनशैली को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय प्रबंधन का अनुसरण करते हुए व्यक्ति को इन तथ्यों का भली–भाँति ज्ञान होता है कि किस कार्य को प्राथमिकता देना है एवं कितना समय देना है। इससे उनकी दिनचर्या व्यवस्थित रूप से संचालित हो पाती है।

शैक्षिक उपलब्धि अर्थात् अकादमिक प्रदर्शन वह मापदंड है, जिसके आधार पर कोई छात्र, शिक्षक या संस्थान अपने छोटे अथवा दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करता है। छात्रों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि वे अपनी दिनचर्या को नियोजित

करें, समय का प्रबंधन ठीक प्रकार से करें एवं इसका अनुसरण भी करें। एक स्वस्थ दिनचर्या के लिए जितना आवश्यक खेल–कूद व मनोरंजन है, उतना ही महत्वपूर्ण नियमित अध्ययन भी है। नियमित अध्ययन, परीक्षा के दौरान होने वाले अनावश्यक तनावों से भी बचाता है एवं साथ ही साथ आत्मविश्वास व मनोबल को भी मजबूत बनाता है। शैक्षिक उपलब्धि ही छात्रों के भविष्य की दिशा व दशा तय करती है।

समय के साथ–साथ नए–नए अन्वेषण हुए जिनका उपयोग जन–कल्याण के लिए किया जाने लगा। वर्तमान समय में शिक्षा का क्षेत्र अतिव्यापक हो गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा केवल सापेक्ष या वास्तु सापेक्ष बन कर रह गयी है, जो हमें केवल बाह्य जगत की सूचनाएं दे रही है। प्रभावी समय प्रबंधन विद्यार्थी जीवनकाल में बच्चों के जीवन को यथासंभव नियोजित करने में सहायक होता है। समय सारणी युक्त दैनिक दिनचर्या से बच्चे खेल–कूद व मनोरंजन के साथ–साथ अध्ययन को भी नियमित समय देने में सक्षम होते हैं। जिसके फलस्वरूप उनका शारीरिक व मानसिक दोनों स्तर पर विकास सुनिश्चित होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा जगत में विद्यार्थियों के लिए समय प्रबंधन कम समय में और कम प्रयासों के साथ अपने कार्यों को पूरा करने में सहायता करती है और यह तनाव से दूर रहने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है, जिससे हमें मानसिक एवं शारीरिक कुशलता प्राप्त होती है जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ प्रदर्शित होती हैं।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है ।

परिकल्पना

H_1 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H_2 विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

H_3 विद्यार्थियों के संकाय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H_4 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

H_5 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

H_6 विद्यार्थियों के लिंग एवं संकाय का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

H_7 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

न्यादर्श

अध्ययन के लिए दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप चयनित किया गया, जिनमें 200 कला संकाय, 200 विज्ञान संकाय एवं 200 वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को लिया गया।

उपकरण

आंकड़ों के संकलन के लिए सनसनवाल (2007) के द्वारा निर्मित समय प्रबंधन मापनी का उपयोग किया गया एवं शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु 10 वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम द्वारा प्राप्त अंकों के प्रतिशत से है।

प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण हेतु 2x2x3 (ANOVA) प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है:

H_1 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक - 1.0
विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग, संकाय एवं अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का सारांश

प्रसरण का श्रोत	वर्ग का योग	df	वर्ग का औसत	F
नेतृत्व	57.551	1	57.551	0.780^{NS}
लिंग	118.868	1	118.868	1.610^{NS}
संकाय	3785.067	2	1892.533	25.636**
नेतृत्व * लिंग	40.141	1	40.141	0.544^{NS}
नेतृत्व * संकाय	105.846	2	52.923	0.717^{NS}
लिंग * संकाय	1650.104	2	825.052	11.176**
नेतृत्व * लिंग * संकाय	52.128	2	26.064	0.353^{NS}
त्रुटि	43408.402	588	73.824	
योग	4738925.000	600		
संशोधित योग	49304.958	599		

****= 0.01 सार्थकता स्तर, NS= सार्थक नहीं**

तालिका क्रमांक 1.0 से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व के प्रभाव हेतु F का मान 0.78, df 1/588 पाया गया, यह प्राप्त F का मान किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा" को स्वीकार किया जाता है ।

H_2 विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के लिंग के प्रभाव हेतु F का मान 1.61 df 1/588 पाया गया , यह प्राप्त F का मान किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है । अर्थात विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा" को स्वीकार किया जाता है ।

H_3 विद्यार्थियों के संकाय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के संकाय के प्रभाव हेतु F का मान 25.63, df 2/588 पाया गया, यह प्राप्त F का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है । अर्थात विद्यार्थियों के संकाय का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि ''विद्यार्थियों के संकाय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को अस्वीकार किया जाता है। पुनः विश्लेषण हेतु कि संकाय किस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी । पुनः तालिका क्रमांक 1.0 द्वारा प्राप्तांकों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि कला संकाय के वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन 84.75 एवं 12.02 पाया गया, विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन 90.68 एवं 4.99 पाया गया एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन 89.69 एवं 7.84 पाया गया । इस गणना का सारांश तालिका क्रमांक 1.1 में दिया गया है।

तालिका क्रमांक – 1.1

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

संकाय	मध्यमान	मानक विचलन
कला	84.75	12.02
विज्ञान	90.68	4.99
वाणिज्य	89.69	7.84

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि कला एवं वाणिज्य के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी । तालिका क्रमांक 1.1 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट है कि कला संकाय के वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान एवं वाणिज्य के विद्यार्थियों से कम पायी गयी ।

H_4 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव हेतु F का मान 0.544, df 1/588 पाया गया, यह प्राप्त F का मान सार्थक नहीं पाया गया। अर्थात समय प्रबंधन एवं लिंग की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि ''विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकार किया जाता है।

H_5 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, एवं संकाय उनकी अंतःक्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव हेतु F का मान 0.717, df 2/588

पाया गया , यह प्राप्त F का मान सार्थक नहीं पाया गया। अर्थात समय प्रबंधन एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि '' विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकार किया जाता है।

H_6 विद्यार्थियों के लिंग एवं संकाय का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया के प्रभाव हेतु F का मान 11.176, df 2/588 पाया गया , यह प्राप्त F का मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया । अर्थात लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि ''विद्यार्थियों के लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को अस्वीकार किया जाता है। पुनः विश्लेषण हेतु लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया किस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है, मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी। पुनः तालिका क्रमांक 1.0 द्वारा प्राप्तांकों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 83.75 एवं 15.43, 90.40 एवं 5.39, और 92.49 एवं 4.08 पाया गया । छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 86.17 एवं 7.06, 90.45 एवं 3.84 और 87.11 एवं 9.50 पाया गया जिससे ये स्पष्ट है कि विज्ञान संकाय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक एवं कला संकाय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गयी । इस गणना का सारांश तालिका एवं आरेख क्रमांक 1.2 में दिया गया है :

तालिका क्रमांक – 1.2

लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का मध्यमान एवं मानक विचलन

लिंग	संकाय	मध्यमान	मानक विचलन
छात्रा	कला	83.75	15.43
	विज्ञान	90.40	5.39
	वाणिज्य	92.49	4.08
छात्र	कला	86.17	7.06
	विज्ञान	90.45	3.84
	वाणिज्य	87.11	9.50

आरेख क्रमांक 1.2

लिंग एवं संकाय की अंतःक्रिया का शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों पर प्रभाव का आरेख

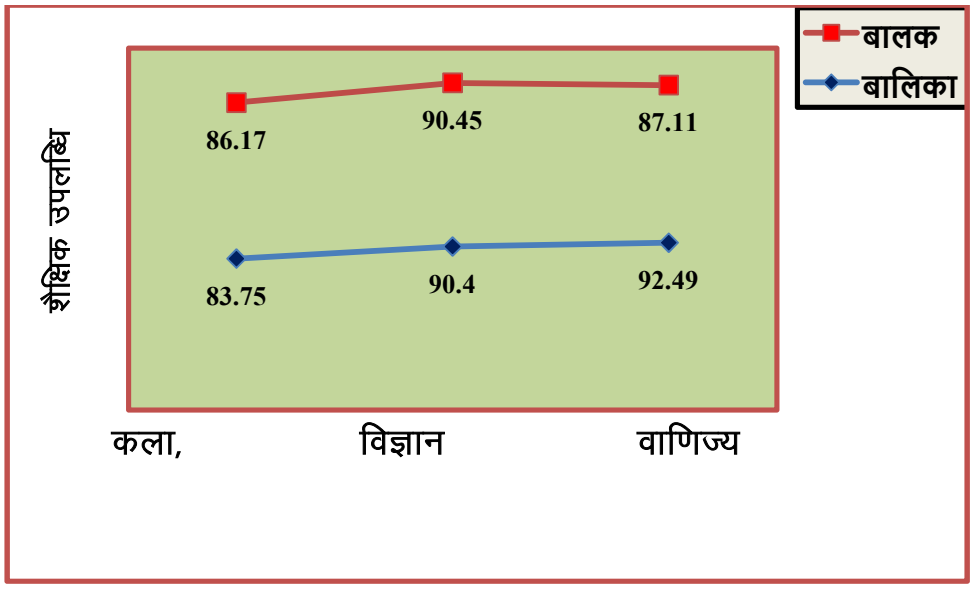

अर्थात वाणिज्य संकाय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक एवं कला संकाय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गयी । बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः में 86.17 एवं 7.06, 90.45 एवं 3.84

और 87.11 एवं 9.50 पाया गया जिससे ये स्पष्ट है कि विज्ञान संकाय के बालकों कि शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक एवं कला संकाय के बालकों कि शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गयी।

H_7 विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक 1.0 से यह भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव हेतु F का मान 0.353, df 2/588 पाया गया, यह प्राप्त F का मान सार्थक नहीं पाया गया। अर्थात समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना कि '' विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व, लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकार किया जाता है ।

निष्कर्ष

1. विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
2. विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. संकाय का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। विज्ञान संकाय के विध्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि कला एवं वाणिज्य के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी । कला संकाय के वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान एवं वाणिज्य के विद्यार्थियों से कम पायी गयी ।
4. विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व एवं लिंग की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ।
5. विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया
6. लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया । विज्ञान संकाय के बालकों कि शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक एवं कला संकाय के बालकों कि शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गयी ।

7. विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व लिंग एवं संकाय की अंतः क्रिया का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

समग्र विवेचना / चर्चा

विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का परीक्षण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा। विद्यार्थियों के औसत उपलब्धि स्तरों के मध्य अंतर होता है, लेकिन यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है।इस प्रकार का परिणाम किसी व्यक्ति की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित करता है, और यह बहुत अधिक शैक्षणिक दबावों के कारण हो सकता है जो दृष्टि और उपलब्धि के लिए गंभीर परिणाम उत्पन्न करते हैं। **हॉडिसन (2006)** ने भी पाया कि समय प्रबंधन और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है। अक्सर, स्कूली छात्र अपना समय व्यवस्थित तरीके से आवंटित नहीं करते हैं, जो उनके अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है। **सुब्रमण्यम (2016) और ह्यूस्टन (2009)** के अनुसार, पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए कठोर प्रबंधन के बजाय स्कूल के दिनों के लिए समय की योजना बनाई जानी चाहिए। इस अध्ययन में पाया गया कि शैक्षणिक उपलब्धि पर लिंग का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा। छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार की कमी है, जो अकादमिक उपलब्धि में लिंग अंतर में योगदान देती है। इससे पता चलता है कि समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध नहीं है। इस विषय में लड़के और लड़कियों में कोई अंतर नहीं है। इसके अलावा, अध्ययन में पाया गया कि छात्रों के समय प्रबंधन के आयाम नेतृत्व और संकाय एवं उनके लिंग के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया गया । उन्हें संवेदनशील के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है। छात्रों के लिंग का उनके समय प्रबंधन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस परिणाम का निहितार्थ यह है कि स्कूल में छात्र और छात्रओं दोनों एक ही समय प्रबंधन का अभ्यास करते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि पर छात्र संकाय का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया। इस विश्लेषण के परिणाम बताते हैं कि विज्ञान संकाय में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि कला और वाणिज्य संकाय के छात्रों की तुलना में बेहतर थी। कला संकाय में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि वाणिज्य संकाय के छात्रों की तुलना में कम पाई गई। अधिकांश विद्यालयों में विज्ञान और वाणिज्य संकाय के छात्रओं में तार्किक तर्क और सोचने की क्षमता होती है, जो आमतौर पर कला के छात्रों में कम देखने को

मिलती है। अधिकांश विज्ञान और वाणिज्य छात्र निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए व्यावहारिक प्रयोगों पर भरोसा करते हैं, जबकि कला के छात्र आमतौर पर ऐसा नहीं करते हैं। अकादमिक उपलब्धि में उन छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया जिन्होंने अपने समय को अच्छी तरह से प्रबंधित किया। आमतौर पर समय प्रबंधन और संकाय का कोई मिश्रण नहीं होता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि सभी छात्रों को, संकाय की परवाह किए बिना, एक निर्धारित अवधि में अपनी पढ़ाई पूरी करनी होती है। समय प्रबंधन रणनीतियों का उपयोग करने वाले और न करने वाले छात्रों के बीच, या उन छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। समय प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करने वाले और नहीं करने वाले छात्रों के बीच उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। लिंग या फैकल्टी इंटरेक्शन के आधार पर उपलब्धि में भी कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। कई शोध अध्ययनों से पता चला है कि समय प्रबंधन के आयाम व्यवस्था, लिंग और संकाय का शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ळें लड़कों और लड़कियों के बीच समय प्रबंधन कौशल में कोई अंतर नहीं है। संकाय के आधार पर प्रभाव देखा गया है किन्तु अंतःक्रियात्मक प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Merkanlioglu, C. (2010). The relationship of time management to the academic performance of master's level students. International Journal of Business and Management Studies, 2(1), 130-137.

Necati, C., & Seville, F. (2010). The relationship between time management skills and academic achievement of potential teachers. Educational Research Quarterly, 33(4), 3-9.

Swart, A.J., Lombard, K. and Jaeger, H. (2010). Exploring the relationship between time management skills and academic achievement of African engineering students - A case study. European Journal of Engineering Education, 35(1), 79-89.

Sewri, K & Kandy, M (2011). Time management skills influence self-efficacy and academic performance. Journal of American Science, 7(12), 720-726.

Olowukere, EI et al. (2015). Time management practices, character development, and academic performance among university undergraduates, The Covenant University Experience. Constructive Education, 6(1), 79-86.

Oyuga, P.A., Raburu, P., Peter, J.O. (2016). The relationship between time management and academic performance among orphan secondary school students from Ru Kenya. International Journal of Applied Psychology, 6(6), 171-178.

Subramaniam, A. (2016) Time management and academic achievement of senior secondary school students. International Journal of Library Research, 4(12), 6-15.

Das, Payal and Bera, Saradindu (2021) Effect of time management on academic achievement of students at secondary level A8. 227–233.